

दुर्घटना से देर भली

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंधानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

दुर्घटना ऐसी घटना है जिसे घटना नहीं चाहिए था किन्तु असावधानी के कारण घट गई। दुर्घटना से लोग मारे जाते हैं जिससे दुःख होता है और मानसिक अशांति होती है। यहां तक की दुर्घटना में जान भी जा सकती है। ऐसी घटनाएं दुर्घटनाएं की श्रेणी में आती है। कभी-कभी हम चलते रहते हैं किन्तु सामने नहीं देखते। सामने गढ़वा या सामने से कोई सवारी आ रही है उससे टकरा जाते हैं और शरीर को नुकसान होता है तो इसे दुर्घटना कहा जाता है। ट्रेनों, बसों, वायुयानों का टकराना जिससे धनजन की हानि हो यह सब दुर्घटना है। दुर्घटना से बचने के लिए सड़कों पर स्थान-स्थान पर यह लिखा रहता है कि दुर्घटना से देर भली। जगह-जगह पर दुर्घटना में घायल लोगों के चित्र बनाकर यह दिखाया जाता है कि यदि थोड़ी सी असावधानी हुई तो यही हाल होगा। ऐसा इसलिए किया जाता है कि सड़क पर चलने वाले लोग सावधान हो जाये। दुर्घटना असावधानी के कारण होती है। प्रायः यह देखा जाता है कि बाइक, कार, बस, ट्रक, गाड़ी, मोटर आदि चलाते वक्त ड्राइवर मोबाइल से बात करते रहते हैं, और उनका ध्यान गाड़ी चलाने पर नहीं रहता। परिणाम यह होता है कि सामने से आ रहा वाहन उन्हें दिखाई नहीं देता, जिसके कारण दुर्घटना हो जाती है और सैकड़ों लोगों की जान चली जाती है। असावधानी ही दुर्घटना का मुख्य कारण है। लाखों लोग प्रतिवर्ष दुर्घटना में मारे जाते हैं। दुर्घटना में मारे गये कुछ लोगों का तो पता ही नहीं चलता कि ये लोग कहा के रहने वाले हैं। कुछ लोगों को तो पुलिस वाले पता लगाकर गंतव्य तक भेज देते हैं। दुर्घटना में किसकी गलती है किसकी नहीं है इसका निर्धारण न्यायालय करता है और सजा देता है। चराचर जगत का न्यायालय ईश्वर है। वह सबसे बड़ा न्यायी है। वहां अन्याय नहीं होता। जो दण्ड वह देता है उसे सबको स्वीकार करना पड़ता है। जैसी करनी वैसी भरनी का सिद्धान्त प्रकृति का सिद्धान्त है इसमें बदलाव नहीं आता। इसलिए मानव को सदैव अच्छा कार्य करना चाहिए। जिससे परिणाम भी अच्छा ही मिले। मानव जीवन बहुमूल्य है। अच्छा कार्य करने के लिये यह जीवन मनुष्य को प्राप्त हुआ है। बुरा कार्य करने

के लिए नहीं। दिनचर्या व्यवस्थित होनी चाहिए। स्वस्थ रहने के लिए जल्दी सोना चाहिए और जल्दी उठना चाहिए इससे स्वास्थ्य ठीक रहेगा। किसी भी प्रकार की शारीरिक दुर्घटना नहीं होगी। शरीर स्वस्थ रहेगा तो बीमारी नहीं आयेगी। अतः जीवन में संयम नियम का पालन आवश्यक है। यातायात के साधनों में वृद्धि के कारण दुर्घटनाओं में भी वृद्धि हुई है। घर से बाहर निकला हुआ व्यक्ति सांयकाल तक सकुशल वापिस आ पायेगा की नहीं इसकी कोई गारंटी नहीं है। गलती किसी से भी हो सकती है किन्तु सड़क पर उसकी कीमत जान देकर चुकानी पड़ती है। दुर्घटनाएं कहीं भी कभी भी घटित हो जाती है। इसकी चपेट में बच्चे, बुढ़े, युवा, स्त्री, पुरुष कोई भी आ सकता है। जल्दबाजी या रोमांच के चक्कर में प्रायः लोग यातायात के नियमों को उल्लंघन करते हैं और किसी तेज वाहन, डिवाइडर या सड़क के किनारे पेड़ों से टकराकर अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं या किसी के जीवन को संकट में डाल देते हैं। दुर्घटना होने में देर नहीं लगती। पास में बाइक या मोटरकार से जा रहा व्यक्ति जो एक सैकण्ड पहले जीवित था अगले ही क्षण मृत्यु के मुख में जा सकता है। दुर्घटनाओं का मुख्य कारण असावधानी है। लोग सड़क यातायात नियम की अनदेखी करते हैं। तेज गति से गाड़ी चलाना, शराब पीकर के गलत दिशा में गाड़ी चलाना, यातायात के नियमों की अनदेखी करना दुर्घटनाओं के मुख्य कारण है। सबसे अधिक दुर्घटनाएं वाहन चालकों की लापरवाही के कारण होती है। दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सबसे अधिक ध्यान वाहन चालकों की गलती सुधारने में होना चाहिए। अधिक से अधिक वाहन चालकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। सड़क दुर्घटनाओं का सबसे अधिक शिकार युवावर्ग होता है। सड़क दुर्घटना को किस्मत नहीं माना जा सकता। सड़क दुर्घटना को रोकना तो हमारे हाथ में है। इसके लिए सड़क पर चलने के कुछ नियम जो स्थान-स्थान पर सड़क पर लिखे रहते हैं। उन पर ध्यान देना चाहिए। गतीसीमा को नियन्त्रित करना चाहिए, सीट बेल्ट को बांधकर रखना चाहिए, गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन से बात नहीं करना चाहिए, दुपहिया वाहन चलाते समय हेल्मेट पहना चाहिए, नसे की हालत में ड्राइविंग नहीं करनी चाहिए। इन नियमों का कड़ाई से पालन कराया जाना चाहिए। सड़कों पर जगह-जगह कैमरे लगाये जाने चाहिए। गतीमापक यन्त्र लगाये जाने चाहिए और नशों में वाहन चलाने पर लाइसेंस रद्द कर

देना चाहिए। बच्चों को सड़क सुरक्षा के नियमों और उनके महत्व के बारे में अवश्य बताना चाहिए। भारत के नागरिकों को चाहिए कि वाहन शौक के लिए नहीं बल्कि जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल हो। दूसरे देशों की तरह भारत में भी नागरिकों को अधिकतर पैदल चलने और साईकिल का इस्तेमाल करने की आदत डालनी चाहिए। इससे पर्यावरण स्वच्छ रखने और सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सकती है। इसके अतिरिक्त सड़कों में इतना सुधार और इन्हें इतना सुरक्षित करना होगा कि पैदल चलने वाले या साईकिल चलाने वाले सुरक्षित रह सकें। सड़क सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए चलते वक्त हमेशा फुटपाथ का प्रयोग करना चाहिए। फुटपाथ अगर न हो तो सदैव सड़क के बायीं तरफ ही चले। ग्रीन सिग्नल होने पर ही सड़क पार करें। सावधानी से ही दुर्घटना से बचाव हो सकता है।